ORIGINAL ARTICLE ISSN:- 2231-5063

Golden Research Thoughts

भारतीय संस्कृति की जननी सरस्वती मोक्षदायिनी मॉ गंगा एवं भारत मेखला नर्मदा मैयाः एक अनुशीलन

Chandrikasinh Somvanshi
Research Scholor,Teacher's Fellowship in History , Adipur (Kutch).

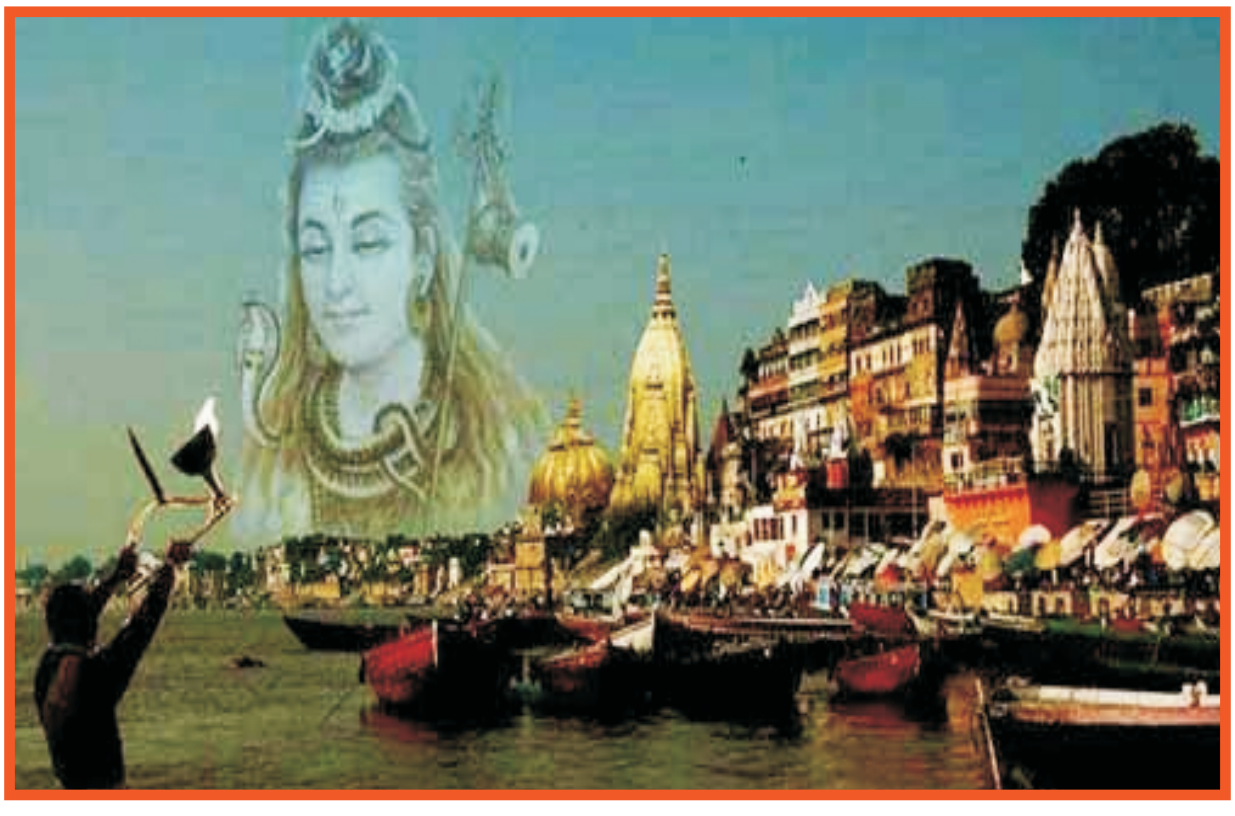

सारांश :

सत महानदियों–सप्त सिन्धुओं का हमने हर अवसर पर यश गया है। यह सब हमारी पवित्र देवियॉ है, माताऍ हैं। इनका यश हमारे रक्त की बूंद–बूंद में है। परंतु इनमें से सरस्वती नदी हमारी सबसे पूजनीय नदी है। यह हमारी पौराणिक नदी है। इस कारण हमारे पुरनो ग्रंथों में इस नदी की प्रचुर माहिमा गाई गई है। इसका वर्णन अन्नवती, उदकवती, सदानीरा नाम से गाया गया है। इस नदी के अन्य नाम 'भरती' , 'शारदा', 'हंसवाहिनी', 'करूणामयी', 'सिहंवाहिनी', तथा 'वागीश्वरी' भी हैं। यह सभी नाम इस नदी द्वारा वैदिक संस्कृति के उत्पत्ति होती थी। भारतीय संस्कृति के पहले–पहल फूल इसी नदी के किनारों पर खिले थे। इनके तटों पर ही हमारे ऋषि–मुनियों ने तपस्या, यज्ञ तथा पूजा करते थे। हमारे महाऋषियों ने वेदों के ज्ञान को इसी नदी के कूल–किनारों पर बैठ–बैठ प्रत्यक्ष में किया था। वैदिक संस्कृति को इसी नदी ने प्रशस्त किया था।

प्रस्तावना :

सरस्वती और दृषद्वती नदी के बीच देश को ब्रह्मार्क्त कहते थे। कुरूक्षेत्र इसी का एक भाग था। इस देश में बड़े–बड़े रमणीक वन, आश्रम, खेत–खलिहान और पशुओं के लिएक व्रज होते थे। यहॉ के लोगों का व्यवहार श्रेष्ठ और अनुकरणीय था। दूसरे लोगों को इन व्यवहारों को जीवन में डालने की प्रेरणा दी जाती थी। वहां के विद्वानों का नाम सर्वत्र भारत में था। सरस्वती सरिताओं में परम पवित्र और श्रेष्ठ नदी थी। यह पुण्य सलिला हिमालय के ऊंचे स्थानों से पोषित नदी थी और वेगवान शीघ्रगामी बहती हुई महानदी का रू‍ ले समुद्र संगम करती थी। इसके किनारे बड़े–बड़े नगर बसे थे और उनमें सम्पन्न मनुष्यों का वास था। यातायात, व्यापार तथा नहरों द्वारा इस नदी के जल का प्रयोग होता था। यह सब आज से हजारों वर्ष पहले की बात है। 5000 वर्ष पुराने खंडहर 'काली बंगां' राजस्थान पर इसी नदी के किनारे मिले हैं। कभी यह नदी आज के राजस्थान प्रदेश में बहती थी। तब राजस्थान आज की तरह मरूभूमि नहीं वरन् हरा–भरा प्रदेश था। भारतीय संस्कृति की विरासत इसी नदी से मिली। इसी नदी के संगम ने हमें जीने व खेती करने की कला को सिखाया।

पता नहीं प्रकृति की किस लीला या मानवों के कुकमों से यह महानदी अपना अस्तित्व खो बैठी और हिमालय ने अपनी अथाह जलराशि का भाग का भाग इस नदी को देना बंद कर दिया, परंतु हम इस महानदी के वरदानों को नहीं भूल सके। जन्म देने वाली मॉ के समान यह नदी हमारी हर सांस में गूॅजती है। हम इस महिमा भरी भरण–पोषण करने वाली करूणामयी माता को जीवन के हर पर्व पर, हर खुशी पर याद करते है। क्योंकि यह महानदी हमारी भारतीय संस्कृति की माता थी। इस कारण हमने इसे विद्या की देवी मानकर अपनी अधिष्ठात्री बना लिया। अब इस नदी का उद्‌गम हिमालय के निचले भाग में हिमालच प्रदेश के सिरमौर जिले में है। यह अब केवल वर्षा ऋतु के नाले के रूप में रह गई है। हिमाचल में यमुना की सहायक नदी 'टोंस' और 'सतलुज' नदी कभी सरस्वती नदी की सहायक नदियां थी। सरस्वती की दूसरी बड़ी सहायक नदी 'दृषद्वती' भी अब एक बरसाती नाले 'चुतंग' के नाम से बहती है। हरियाण में इन दोनों का मेल मिलाप 'मैनी नामक स्थान' पर होता है। 'पेहोआ' के निकट इसमें 'मारकण्डा नदी' मिलती है। सरस्वती में 'जाखल' से पहले 'घग्घर नदी मिलती है। वर्षा ऋतु में इस स्थान से सरस्वती नदी में काफी जल हो जाता है। श्रीगंगानगर के पास राजस्थान में यह नदी पूरी अदृश्य हो जाती है। इसके पूर्व भी दो– तीन स्थानों पर हरियाणा प्रदेश में सरस्वती लुप्त हो जाती है और कुछ दूरी के पश्चाात पुनः प्रकट होती है।

सरस्वती नदी हमारी संस्कृति और सभ्याता की आादि जननी एवं आादि माता है। इस कारण सूख जाने के पश्चाात भी हम इसके गौरव को नहीं भूल सके। सरस्वती को हमने अपने मन में धारण कर संस्कारों में बॉध लिया है। प्रयाग के संगम में हमने सरस्वती को गंगा–यमुना से सूक्ष्म रूप से जोड़ दिया है। गुजरात प्रदेश में प्रभासपाटन के स्थान पर रेत में से फुटने वाली धारा को इसी सरस्वती का अंग मान नयी सजावट से पूजा है। कच्छ के रण में पूरी बेग एवं जोर–जोर के साथ बहती थी, किंतु कुछ समय के अन्ताल के दौरान सरस्वती नदी कच्छ के थर के रण में 'सूख' जाती है। अर्थात् 'भूमिगत' हो जाती है। अर्थात् 'पाताल लोक' में 'सूख' जाती है। अर्थात् 'भूमिगत' हो जाती है। अर्थात 'पाताल लोक' में समा जाती है। कच्छ की संस्कृति एवं सभ्यता का थोड़ा–बहुत परिचय हम यहॉ पर देना उचित समझते है। यह नदी कभी भी अरबसागर में नहीं मिल पाया, क्योंकि कच्छ में काफी उथल–पुथल सदियों से होते आ रहे हैं, कभी सामुद्रिक तूफान, तो कभी भयंकर झंझा–झकोर हवाएँ इत्यादि–इत्यादि। यही एक कारण है कि 'धोलावीरा', 'कानमेर', 'शिकारपुर', 'कुरून', 'मोगारकोटड़ा', 'सुरकोटड़ा', 'रंगपुर', 'देशलपर', 'ध्रॉग' और 'पाबुमन्द', ओजड़ी आदि–आदि जो की कच्छ की पवित्र पावन भूमि में ख्याति–प्राप्त नगर थे, वे सभी काल कलवरित हो गये।

कच्छ के लिटल रण से समुद्र 11 कि. मी. दूर था। कच्छ के दक्षिण में सौराष्ट और उत्तर में सिन्ध है। कच्छ जगह बीच में पड़ता है एवं कर्क रेखा की सिधाई में भी पड़ता है। इयलिए पूरे कच्छ पर भौगोलिक रूप से सौराष्ट तथा सांस्कृतिक रू‍ से सिन्ध का प्रभाव अधिक रहा है। सिन्ध को आने–जाने का मार्ग यहीं से पड़ता है। कच्छ और सौराष्ट्र के मध्य भाग में पहाड़ियों स्थित हैं। कच्छ में कई पहाडियॉ स्थित हैं। इनमें मूरीया, कारों, लिलियों, धीणोधर आदि प्रमुख है। उन सभी में धीणोधर सबसे ऊॅच है। बागड़ के मैदान में सौराष्ट्र के मध्य भाग में पहाड़ियॉ स्थित हैं कच्छ में कई पहाडियॉ स्थित हैं। इनमें मूरीया, कारो, लिलियों, धीणोधर आदि प्रमुख है। ये पठार लावा पठारी के बने हुए है। कच्छ के पठारों का वहॉ से निकलने वाली छोटी–मोटी नदियों से घर्षण द्वारा नीचा बना दिया है। कच्छ के पठारों में 'बेसालूट नामक चट्टाने' हैं कच्छ में भी पहाड़ी प्रदेशों के प्रदेशों के प्रदेशों के दक्षिण में 'संकार मैदान' छाया हुआ है। जिसे डंडी के मैदान के रूप में जाना जाता है। कच्छ का रेगिस्तान दो भागों में बॅटा हुआ है। कच्छ की मुख्य भूमि के उत्तर में बड़ा रेगिस्तान और कच्छ एवंत ल गुजरात के बीच छोटा रेगिस्तान प्रदेश फैला हुआ है। बड़े रेगिस्तान का कुछ भाग रेती का बना हुआ है। इस रेगिस्तान में खड़ीर बेट(खरीट–बेला) और खावड़ा जैसे नखलिस्तान भी फैले हैं। अन्य रेगिस्तानों की तरह इनमें वर्षा में पानी भर जाता है। तब यह प्रदेश एक टापू के रूप में दिखाई देने लगते हैं। कच्छ का रेगिस्तान वर्षा ऋतु मिट्‌टी और कीचड़ वाला बन जाता है। ''कच्छ के दक्षिण में कच्छ की खाड़ी स्थित हैं।'' यह किनारा भी कम कटा–फटा है। यहॉ रेती के टेकरों ;ढिगले यानि ढेरद्ध की संख्या अधिक होने के कारण नौका व्यवहार (यानि नौका विहार) के लिए बहुत उपयोगी नहीं है। कच्छ की नदियों में 'कनकावती', 'मेतई नदी', 'खारोड़', 'रूकमावती', 'भूखी', 'चॉग नदी' (चौबारी गॉव के पास में) आदि नदियॉ बहती हैं। कच्छ की सभी नदियॉ मध्य में स्थित पहाड़ी प्रदेश में से निकलती है और कच्छ दक्षिण में स्थित कच्छ की खाड़ी में जाकर गिरती हैं। इनके अतिरिक्त तल गुजरात की 'बनास', 'सरस्वती' और 'रूपेण' के सिवाय सभी नदियॉ खम्भात की खाड़ी में जाकर मिलती हैं। सरस्वती नदी कच्छ के रेगिस्तान में आकर रेत का ढेर बन जाती है और समुद्र से मिलने की चाह अधूरी रह जाती है, इसलिए इस नदी को ''कुवॉरी नदी'' अर्थात् ''बिना मॉग भरी नदी'' भी कहते हैं। सरस्वती एवं सिन्धु नदी का भी अपना–अपना एक अलग ही महत्व एवं उनकी अपनी विरासत रही हैं।

वासुदेव हिंदी (जैन कथा) में एक कहानी प्रसिद्ध है कि वाराणसी में परिव्राजिका सुलसा याज्ञवल्क से पराजित होकर उसकी शिष्या बनी और उससे उसको पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका उसने गंगा तीर्थ पर त्याग किया। पीछे ये पुत्र उसका पीपल का दूध पीकर के बड़ा हुआ जिससे उसका नाम ''पीपलाद'' रखा। सुलसा की एक शिष्या नन्दा ने पीपलाद को उसके जन्म का रहस्य बताया तो पीपलाद ने अपने माता–पिता की हत्या करके बाद में ''अथर्ववेद'' लिखा।

महाभारत में एक ऐसी ही कहावत है। आदिपर्व के चैत्ररथ पर्व के अध्यय 176–80 में कल्माषपाद राजावी कथा है। जिसमें उसे और वसिष्ठ के पुत्र शक्तिमुनि को मार्ग के विषय में बाधा हुई। कल्माषपाद मुनि को मारने लगा तब मुनि ने उसे श्राप दिया कि–''तु मानवभक्षी राक्षस होगा।'' कल्माषपाद ने मुनि का ही पहला तो वहॉ उसे पता चला कि एक पुत्र जीवित है तो उसने आत्महत्या नहीं कि और अपने एक पुत्र को बाकी पुत्रों का बदला लेने को तैयार किया। इसी प्रसंग पर एक उदाहरण दिया कि कृतवृद्ध राजा ने उसके गुरूओं को भृगु ब्राह्मणों को धन दिया; वर्षो के बाद जब धन की जरूरत पड़ी तो अपना धन वापस मॉगा तब ब्राह्मणों न नहीं दिया तो क्षत्रियों ने ब्राह्मण को मार दिया। ये संहार चल रहा था तब एक भृगु स्त्री ने उसकी जांघ में गर्भ धारण करके रखा था। दूसरी स्त्रीयों के द्वारा यह खबर सुनकर उसके गर्भ को खत्म करने के लिए तैयार हो गये, वहां पर गर्भ प्रकट हुआ और उसके तेज से क्षत्रियों की दृष्टि हार गई।क्षत्रिय शर्म में स्त्री से प्रार्थना करने लगे तब उस ब्राह्मण स्त्री ने कहा कि– 'पितृघातको से बदला लेने के लिए ये गर्भ सौ साल तक संभाला है, इसलिए आप से बदला लेगा । आप इसकी प्रार्थना करो।'ऊर में से प्रगट हुआ और्वे ने दृष्टि दी, लेकिन उसने प्रतिज्ञा ली कि वो क्षत्रियों से बदला लेगा। पितृयों ने कहा कि– 'हम अपनी इच्छा से मृत्यु मॉगेगे यह करेगी' पितृयो ने कहा– 'कोध से निकली हुई अग्नि को पानी पीला दे, क्यों कि पूरा जगत पानी से भरा है–तेरी कोधाग्नि को तू पानी में फेंक दे; उस महासागर के प्रभास में तप करते हिरण्य, वज्र, न्यंकु, और कपिल नाम के चार ऋषियों ने भारतीय संस्कृति की जननी मॉ सरस्वती का आहवाहन किया तो सरस्वती उनके आश्रम में स्त्रोत रूप में प्रकट हुई। मार्ग में सरस्वती को कृतस्मर पर्वत ने रोककर उससे शादी करने का प्रस्ताव रखा, तो सरस्वती ने कहा कि पिताजी (ब्रह्मा) की अनुमति के बिना नहीं हो सकता। कृतस्मर कोधित हो गया और बलत्कार करने के लिए तत्पर हुआ। तब सरस्वती ने कहा कि– 'तू पहले ये वडवा–नल को संभाल कर रख

1.सरस्वती ने नदी का रूप लिया और वडवानल को लेकर प्रभास के तरफ चली। मार्ग में जहॉ–जहॉ जगह मिली वहॉ–वहॉ जगह मिली वहॉ–वहॉ प्रकट हुई, नही तो पाताल में प्रवास करती रही।

तब तक मैं नहाकर आती हूँ' वडवानल का हाथ लगाते ही कृतस्मर जलकर राख हो गया?

सरस्वती नदी का समुद्र में मिलनाः–

वडवानल को फिर से लेकर सरस्वती अपने समुद्र के नजदीक पहुँची। वडवानल ने कहा– मैंने मेरा कर्तव्य अच्छे से पूरा किया है। वडवानल से प्रसन्न हो कर सरस्वती से वरदान मॉगने के लिए कहा तो सरस्वती सोच में पड़ गई, लेकिन विष्णु ने अंतरिक्ष में रहकर सूचना दी तो उसने उसी प्रकार से उससे मॉगा कि–'हे वडवानल, आप प्रसन्न हुए हो तो शूचिमूख किया और तभी से ही समुद्र का पान किया करते हैं, परंतु लेकिन अनंतसागर के जल का अंत कभी अंत कभी आता नहीं। इस कहानी में सरस्वती के वडवानल को उत्तर में से, संभवतः हिमालय में से प्रभास तक लेने का कार्य किया है। मार्ग में से लिखी हुई है ऐसा जाना जाता है। विद्वानो ने बहुत सी कल्पनाएँ की है, पर ये कथा पुराणकारी महाभारत में से लिखी हुई है ऐसा जाना जाता है। प्रभासखंड कहता है कि सरस्वती कुरूक्षेत्रमें, भद्रावर्तमें, पुष्कर में, श्रीस्थल में और प्रभासमें है। वडवानल का ये प्रसंग त्रेतायुग का है। (प्रभासखंड अ. 28) ''उसके बाद मन्वंतर में रूद के कोध से ज्वालामुख नाम से जानी जायेगी। सरस्वती का इतिहास जानने वाला सभी तीथों का फल प्राप्त करता है, कारण कि ये स्वर्ग की सीड़ी है।''

'सरस्वतीवासमाः कुतो गुणाः सरस्वतीवाससससमाः कुताः' इति।
सरस्वती प्राप्य दिवगता नराः पुनः स्मरिष्यन्ति नदीं सरस्वतीम्।।

सरस्वती स्नान का माहात्म्य लिखते लिखते पुराणकार एक दृष्टांत देता है कि जब महाभारत का युद्ध पूरा हुआ था तो दुर्योधन का संहार करके अर्जुन घर गया और प्रतिहा के साथ युधिष्ठिर को कहलवाया कि अर्जुन और कृष्ण आपको प्रणाम करने आये हैं। प्रतिहार ने बाहर आकार कहा कि युधिष्ठिर महाराज ने कहा है कि आप दोनों महाकूर कर्म करने वाले हो; पिता के समान अपने से जेष्ठ कौरवों को मारा है।' युधिष्ठिर कि बात सुनकार श्रीकृष्ण ने कहा कि–

मा गयां गच्छ कौन्तेय मा गंगा मा च पुष्करम्।
तत्र गच्छ कुरूश्रेष्ठ यत्र प्राचीन सरस्वती।।

हे कौन्तेय, गया के गंगा के पुष्कर नहीं जाओ प्राची सरस्वती है वहॉ जा तू। अर्जुन और अन्य पाण्डवों को लेकर सस्वती में स्नान करके पाप मुक्त होकर युधिष्ठिर को चिंतामुकत किया। बहुत से लेखको ने वैदिक सरस्वती के बारे में अलग–अलग धारणाएँ की हैं। वैदिक सरस्वती ये सिर्फ एक कल्पना है ऐसा भी एक मत है, जब दूसरे कहते हैं कि पौराणिक कथाओं के संबंध में उसे कम करके और सिद्धांतो को अनुरूप देकर समाधान करने का प्रयास है। इसलिए भी इस विषय में थोड़ी विचारण मॉगी है।

2.इससे स्पष्ट होता है कि कृतस्मर पर्वत ज्वालामुखी हुआ और वो फट गया उसके बीच में से सरस्वती निकली होगी। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि स्थल में खड्डे हैं।
3.इस कथा को महाभारत में कोई जगह नहीं। पुराणकार ने मूलग्रंथ की अमान्य लोपी केवल को महत्व बढ़ाने के लिए ये कहानी लिखी होगी ऐसा लगता है।

ऋग्वेदकी खिल ऋचाओं में एक मंत्र है–
यत्र गंगा च युमना यत्र प्राची सरस्वती।

यत्र सोमेश्वरों देवः तत्रगाममृतं कृधि....इन्द्रायेन्द्रो परिस्त्रव।।

सरस्वती को इसमें समुद्र की लहरों बहती महानदी की तरह उपमा दी है। भारत में अभी सरस्वती नाम की तीन नदियॉ है; उसमें से एक हिमालय के अन्तर्गत शिवालिक पहाड़ियों में से निकल कर पटियाला के पास से होकर राजपुताना के रण में सिरसा से थोड़ा ही दूर लुप्त हो जाती है; फिर चलोर गॉव के पास देखा दई के भवानीपुर के आगे उसे मार्कण नदी मिलती है और उसमें मिलकर वह सरस्वती के नाम से जानी जाती है। वहॉ से घघ्घर को मिलती है और रण में लुप्त हो जाती है। दूसरी नदी आरासुर में से (अंबाजी–कोटेश्वर के बाजु में) निकली गुजरात में पाटण के पास से होकर कच्छ के रण में लुप्त हो जाती है। तीसरी नदी सौराष्टञ में गिर के जंगल में से नीकली प्राची के पास प्रभास पाटण के नज़दीक हिरण्या के पास समुद्र में मिलती है। महाभारतकार तथा पुराणकारों ने एक धारणा बना ली कि नदी तो एक ही है, लेकिन वह हिमालय में से निकली रण में लुप्त हा गयी, पुनः प्रकट हुई, पुनः रण में ही लुप्त हुई, आखिर गिर में से होकर समुद्र में जाकर मिली।

मरूभूमि की सरस्वती के लिए महाभारतकार अनुशासनपर्व अध्याय 246 में एक सुंदर लिखी है। 'चंद्र' की पुत्री 'भद्रा' को उतथ्य नाम के ब्राह्मण से शादी करवाई, लेकिन वरूण चंद्र की पुत्री का पाणिग्रहण करने को उत्सुक था, जिससे उसने भद्रा का हरण किया। भद्रा आनंदपूर्वक वरूण के अद्‌भुत नगर में रहने लगी। नारदजी को इस बात पता चलते ही उसने शोकातुर उतथ्य को सारी बात बताई की–'तेरी पत्नी वरूण के नगर में है उसको वहॉ से लेकर आ।' उतथ्य को शक्ति से कम लग रहा था तो उसने नारद को सुलाह के लिए नारद को वरूण के पास भेजा, नारद ने मिलकर उतथ्य से कहा कि– 'वरूण मान ही नहीं रहा, उसने मुझे गला पकड़ कर बाहर निकाल दिया।' उतथ्य ये सुनकर कोधित हो उठा और तपोबल से जगत का पानी ढूँढने लगा। उसे पृथ्वी ने कहा कि– 'छः लाख घराओ वाला वरूण का स्थाम मुझे दिखायो!' उतथ्य की आज्ञा होते ही समुद्र वरूण के स्थान से हट गये और वहॉ की क्षार भूमि प्रकट हुई। उस प्रदेश पर बहती सरस्वती नदी को उतथ्य ने कहाः 'हे भीरू सरस्वती! तू यहा से अदृश्य हुई मरू नामक देश के देश में पलायण कर और जिससे ये देश अपवित्र हो जाये।' ऐसे पूरा प्रदेश जल विहीन कर दिया जिससे वरूण उतथ्य के शरण में आ गया; उसने भद्रा को स्वीकार किया और पृथ्वी फिर सेजल वाली बन गयी ऐसे ही महाभारतकारने एक सुंदर कहानी ढूँढ निकाली मरूभूमि में लुप्त हुई सरस्वती के लोप का कारण बताया। वास्तव में गिर की सरस्वती भी समुद्र में मिलती नहीं है। हिरण्या के प्रवाह में सरस्वती का प्रवाह मिलता नहीं। यमुना

4.ज्योग्राफिकल डिकशनरी ऑफ अेन्श्यन्ट एण्ड मीडिवल इन्डिया (नंदलाल डे) कलकत्ता
5.वनपर्व (महाभारत)– 'विनशल के पास मरूपृष्ठ में अंत हिंत हुई सरस्वती आगे बढ़ती है।
6.ओल्डन्हाम मानते है कि सरस्वती का मूल हिमालय में नहीं होने से शिवालिक पर्वत में भूकंप हुआ ये सरिता सुख गई (जर्नल ऑफ ओशियाटिक सोसायटी 1893, पृ. 40)।

के जल में रंगो कि तरह प्रयाग में अलग दिखता है वैसे ही यहॉ भी रंग दिखते नहीं है, परंतु पूर आये तब स्पष्ट दिखता है कि सरस्वती समुद्र में नहीं जाकर सीधी पश्चिम तरफ भूमि के उपर फैर कर वापिस हिरण्या में मिलकर समुद्र में मिल जाती है। यहॉ सरस्वती प्राची–वाहिनी होती है। ऋग्वेद में 'एका चेत् सरस्वती नदीना शुचिर्यन्ती गिरिभ्योच्छा समुद्रान'। उसे सभी नदियों में से श्रेष्ठ मानकर उसे वैदिक समय में वो वर्तमान गंगा, युमना और सिंधु से भी मोटी होगी, परंतु भुकंप अथवा अन्य कुदरती कारणों से सरस्वती लुप्त हो गई और जिससे तीनों नदियॉ एक है ऐसा कहा जाता है लेकिन ऐसी मान्यता स्वीकार नहीं है। प्रयाग के पास सरस्वती नहीं, केवल ऋग्वेद के परिशिष्ट (यत्र गंगा च यमुना यत्र प्राची सरस्वती) से कपोलकल्पित सर्जन किया! यहॉ तो गंगा–यमुना की उपमा दी गई है; कारण कि जहॉ गंगा–यमुना हो तो सोमेश्वर की प्राची वहॉ संभव नहीं। खिलसूकते ने केवल 2000 वर्ष पहले लिखा है, मूल ऋग्वेद में नहीं है–उसमें हिरण्या और सरस्वती को गंगा–यमुना के साथ समानता दी गई है।

इस प्रकार वेद के वाक्यों के उपर पुराणकारों ने ऐसी कल्पना सरस्वती के लिए बनाई कि सरस्वती हिमालय में से निकल कर मरू देश में लुप्त हो गई। मेवाड़ में से निकली उत्तर दिशा में रण में फैली और वापिस गिर के जंगलों में से निकल कर समुद्र में मिलती है ऐसा लिखा हुआ मिलता है। ऐसी कल्पना है कि गिर की सरस्वती पर्वत में से निकलकर समुद्र में मिलती है, वहॉ प्राची तीर्थ है, सोमेश्वर है और सरस्वती कुमारिका होने से रत्नाकर को जाकर मिलती नहीं जिससे 'कुमारी सरस्वती' को उपमा मिली है, उसे गुजरात, मारवाड के पंजाब की सरस्वती के साथ केवल एक ही नाम है और कोई दूसरा नाम नहीं; और वैदिक सरस्वती हो तो वो प्रभास की ही है इसमें कोई संदेह नहीं। पीछे से समुद्र में नहीं मिलती नदियों को कुमारिका स्वरूप बोलकर उसका नाम 'सरस्वती' रखा हो उससे आज का कोई संबंध दिखता नहीं। कृतस्मर में ज्वालामुखी फटते है वहॉ से जो मार्ग बनता है सरस्वती वहॉ से निकली हो ऐसा संभव है। आज सरस्वती के दोनों किनारों पर पत्थरों की खाने हैं और प्रभासखंडमें कहा गया है– शिल्पों और पत्थरों का उपयोग किया गया है। कितने ही विद्वानों ने सरस्वती को भूतल उपर की भौतिक नदी के स्वरूप से भिन्न सोचा है और आर्य–तत्ववेत्ताओ ने उसे उच्च विचार श्रेणी में कैसे कम समझा है वो देखें। निघंटु में सरस्वती का मध्यस्थनीय है। 'इमं में गंगे यमुने' इस मंत्र का अर्थ है दसों दिशाओं में प्रकाश फैलाने वाले सूर्य की दशों किरणों का समूह एक सरस्वती नाम का किरण है। उक्त मंत्र का दूसरा चरण 'रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरि धुतं प्यो दुदुहे चाहुषाय' अर्थात् नाहुषों के लिए भुवन का पूरा घी, दूध और धन लेने का प्रयत्न किया है। 'भुवन' शब्द स्पष्ट है। नहुष आकाशीया पदार्थ है। घृत, पय, धन, आकाश में जलवाचक है। अर्थात् आकाश पक्ष मंत्र का यह अर्थ हुआ हि बादलों में से एक किरण निकल कर नहुषों अर्थात् बादलों के लिए सौर पदार्थो के लिए समस्त भुवन के जल को खींचकर समुद्र अर्थात आकाश को भरते हैं। ये वर्णन पृथ्वी की सरस्वती नदी का नहीं है।

ऋग्वेद का एक ओर मंत्र है–

7.'पुराणोंमें गुजरात' में श्री उमाशंकर जोषी इस विधान को स्वीकारते है। मेकस मूलर वैदिक सरस्वती को समुद्रगामिनी मानते है। मेकडोनेल पंजाब की सरस्वती को वैदिक सरस्वती मानते है।

8.पुराणकाल में ये नदी एक लहर में बहती नहीं थी तो इससे जाना जाता है। सरिता पर के तीर्थो के लिए देखो परिशिष्ट–6। स्वर्गीय डॉ. शुम्भुप्रसाद हरप्रसाद देशाई कृत, 'सौराष्ट्र का इतिहास' (गुजराती) अध्ययन छठवॉ देखिए।

'वातस्याश्वो वायोः सखा यो देवेषितो मुनिः।
उभौ समुद्रावाक्षेति अश्वः पूर्व उतापरः।।''

इनका अर्थ है कि– उत्तर और पूर्व ऐसे दोनो समुद्र में लहेरें है; परंतु गूढार्थ ये है कि पूर्व में प्राप्त काल सूर्योदय और सूर्योस्त होता है। इस प्रकार का ऋग्वेद के दूसरे तीन मंत्र 10, 136, 4 और 9, 33, 6, और 10, 47, 2 का तात्पर्य ये है कि आकाशस्थ मेघा में से पृथ्वीष्ठ मेघ आया। पृथ्वी की नदी लेकिन सूर्य के प्रकाश में से मेघ में से पृथ्वी पर जल लानेवाली किरणरेख है।

'पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा, देशेस्मिन्नभवत् सरित्।।

पॉच नदियॉ अपने प्रवाह से सरस्वती की तरफ जाती है और पॉच प्रकार की बनकर देश में बहती है ये सादा शब्दार्थ है; परंतु पंजाब की पॉच नदियॉ सरस्वती में नहीं जाती और सरस्वती पंचधारा बनकर बहती नहीं, इसलिए इसका अर्थ वेदोकी भाषा में ही करना जरूरी है। इस प्रकार इसका अर्थ वाणी होता है।
यर्जुवेद 20–43 में लिखा है कि–

''सरस्वतीडादेवी भारती विश्वभूर्तयः'' अर्थात् कि– 'सरस्वती' 'इडा' और भारती जाने पहचाने नाम है। वाणीवाचक 'सरस्वती' शब्द वेदों में उपयोग किया गया है। देवता के लिए भी उसका उपयोग किया गया है। चित्त की पॉच वृत्तियों स्मृति में रहकर वाणी द्वारा पॉच प्रकार का प्रभाव होता है। वे पांच स्त्रोत गिन सकते है।
ऋग्वेद 5–53–9 इन्द्रियों रूपी पॉच नदीयों के नाम नीचे अनुसार है।

'मा वो रसा अतितसां कुभा कुमुः मा वः सिंधुर्निरीरमत्।
मा वः परिष्ठात्सरयूः पुरिषिणी अस्मे ईत सुम्नमस्तु वः।।''

'हे मरूतो आपकी रसा, कुभा, कुमु, सिंधु और प्रसरेल जल वाली सरयू हमारे लिये सुखदायी हो अर्थात पॉचो इन्द्रियों के विषय वाणी के द्वारा दिखते हैं और वाणी के द्वारा आये ज्ञान पांचों इन्द्रियों विषय में बनता है।
विद्वानो के अनुसार बेचे गये सरितायो के नाम सरिता के अर्थ में नहीं दूसरे अर्थ में उपयोगी है। वैदिक सरस्वती हिमालय में से उत्पन्न होकर समुद्र में से लुप्त और प्रकट होती है, नहीं बहती हो अर्थात तीनों सरिता अलग होगी लेकिन एक बात तो स्पष्ट है कि सरस्वती आर्यो का प्रिय शब्द थाः देवता, वाणी, विद्या आदि का सूचक था। सरस्वती को कुमारी (''कुवॉरी दुल्हन'' अर्थात् 'बिना मॉग भरी नदी') कहने में आया है। सागर को

9.पंडित रघुनंदन शर्माः वैदिक संपत्ति (ऋग्वेद 7, 95, 2, 52)
10.सदर के आधार पर।
11.'वैदिक संपत्ति' तथा अन्य विद्वानो के लेखों के आधार पर।
12.पारसी इरान मे समृद्ध हुए पहले भारत में थे और जब वे उत्तर में गये तब उनके देश को 'इरान' (आर्य का देश) कहते। वहॉ की एक नदी को हरस्वती (सरस्वती) और दूसरी को हरखू (सरयू) नाम दिया।

सरिता का पति कहा गया है। इस कारण से सरिता के पति के पास जाना ही चाहिए, लेकिन जो सरिता सागर में नहीं जाती उसका क्या? इससे अगर वैदिक शब्दों में कल्पना मानकर पुराणकाल में देवी–देवीता उत्पन्न हुए वैसे ही रण में लुप्त हुई के सही तरीके से सरिता में नहीं जाती पतिविहीना है और इससे उसका नाम सरस्वती देना हो तो असंभव नहीं।
इस विषय में पुराणों में इसकी पद्धति के अनुसार एक बड़ा प्रश्न खड़ा कर दिया है। पद्मपुराण कहता है सरस्वती प्लक्ष प्रस्त्रवण में से निकलती है और रण में मिलती है। वैदिक आधार पर वो समुद्र में मिलती है। पुराणकारो ने भारत की सरस्वती धारण करने वाली तीन नदियों को एक बना दिया है और जहॉ उसका किनारा नहीं मिलता वहॉ वह लुप्त हो जाती है ऐसा कहकर समाधान कर दिया है। स्कंद पुराणा में प्रभासखण्ड में तो विशेष स्पष्ता कि गई है; 'सरस्वती जब वडवानल को समुद्र में लेकर जाने के लिए सोचती है तब ब्रह्मा कहता है कि– 'शर्मित हुई तू जब वडवानल को समुद्र मे लेकर जाने के लिए सोचती प्रत्यक्ष होगी और प्राची प्रति वहन करेगी, जिससे 33 कोटि तीर्थो मेरे शासन के अनुसार तुझे मिलेंगे और तेरी सहायता करेगें। इसके पीछे भी एक सुंदर तर्क है। वस्तुस्थिति को कम करने का एक प्रयत्नह˜। पहला कारण वडवानल की कहानी को समर्थन दिया है, लेकिन वहीं प्रभातखं डमें स्पष्ट बताया गया है कि 'मन्वंतर खुद ही जनता है कि सरस्वती के लुप्त होने का कारण भूकंप है। कोई भी भयकंर भूकंप से 'नदीतमा' सरस्वती का प्रवाह बंद हुआ और उसकी स्मृति के लिए वडवानल की कहानी जोड़ दी।; लेकिन वास्तव में ये सरस्वती एक स्वतंत्र नदी है।

सिन्धु नदी : हमारी विरासत

हमारे शास्त्रों में मानवों की उत्पत्ति का स्थान आज के तिब्बत में मानसरोवर और कैलाश के पास वाले स्थान को माना है। यह देवताओं का स्वर्ग देश था। हिमालय अब भी लगातार ऊँचा हो रहा है। पहले हिमालय इतनाऊँचा नहीं

था, इसी कारण यह स्थान इतना ठण्डा नहीं था, जितना अब है। देवताओं की इस धरती पर हमारे पुण्य क्षेत्र और तीर्थ हैं। अब चाहे मानसरोवर और कैलाश दूसरे की भूमि हैं, परंतु यह हमारे शिरोमणि तीर्थ हैं और हमारी आस्थायों इस क्षेत्र में उसी तरह जुड़ी हैं। जैसे 'बद्रीनाथ' और 'केदारनाथ' के साथ हैं। हमारे देश की चार प्रमुख नदियॉ इसी क्षेत्र से निकलती हैं इस कारण हमारी मान्याताओं के अनुसार यह भू–भाग भारत वर्ष का ही अंग था। सन् 1962 तक भारतवासी निर्विध्न इस क्षेत्र में तीर्थ–यात्रा करते थे। हिमालय की यह चारों पुत्रियॉ जो मानसरोवर–कैलाश के प्रदेश निकलती हैं, के नाम– 'सिन्धु', 'ब्रह्मपुत्र', 'सतलुत' और 'घाघरा' हैं। यह प्रदेश संसार का सबसे ऊॅचा पठार है और हिमालय के सब भण्डारों को समेट कर ये नदियॉ भारत की धरती को पवित्र करती हैं। सिन्धु और ब्रह्मपुत्र पश्चिम और पूर्व में भारत की दो बातों के

13.ऐसा भी मान्यता है कि ये महानदी सूख जाने से उसकी स्मृति रखने के लिए आर्यो ने अन्य सरिताओं का सरस्वती नाम दिया लुप्त नदी को अमर बनाया। देखा आगे।
14.पद्मपुराण खंड –6।
15.प्रभासखंड (स्कंदपुराण) 3–3–24–29।
16.श्री उमाशंकर जोशीः 'पुराणों में गुजरात'।
17.चहे कोई भी बहती नदी को सरस्वती कह सकते हैं।

स्मान हैं। सतलज और शारदा (घाघरा नदी का ऊपर वाला हिमालयी भाग) हिमालय से मार्ग बना सिन्धु और गंगा में मिलती हैं। इस प्रकार मानसरोवर–कैलाश के मार्ग का बूंद–बूंद जल भारत के भाग्य को सींचता है।

सिन्धु हमारी सबसे वेगवती नदी है जो मानसरोवर नदी है जो मानसरोवर झील के पास कैलाश की तलहटी से निकलती है। वहॉ पर इस नदी की धारा पश्चिमोत्तर दिशा की ओर बहती है। काश्मीर में पश्चिमी–दक्षिण का रूख कर भारत में से होती हुई पाकिस्तान में प्रवेश करती है। यहॉ से इस नदी का प्रवाह निरंतर वेगवान बहता है ओर हिमालय की पश्चिमी श्रृंखलाओं के पहलू से बहती हुई सिन्धु नदी पंजाब और सिन्धु, के मैदान में उतरती है। अब इसमें पंजाब की पॉचो नदियों का जल मिलता है और यह महानद सिन्धु, अंत में अरब की खाड़ी में संगम अब इसमें पंजाब की पॉचो नदियॉ का जल मिलता है और यह महानद सिन्धु, अंत में अरब की खाड़ी में संगम करता है। मार्ग में, सिन्धु में, पश्चिम–उत्तर दिशा से स्वात, काबुल, कुरम, गोमल आदि नदियॉ मिलती हैं। अटक नामक स्थान पर काबुल नदी पर इसका संगम बहुत महत्वपूर्ण है। यह शहर हमारे इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान भी रखता है। जैसे पानीपत पर अधिकार सम्पूर्ण गंगा–यमुना दोआब की कुंजी है उसी प्रकार पंजाब की धरती पर अधिकार की चाबी अटक है। अब इस अथाह जल राशि को लें। सिन्धु नदी कुछ सम्भल–सम्भल कर चलती है, परंतु वेग अब भी बहुत अधिक है कि सिमटे भी नहीं सिमटता। प्राचीन सिन्धु सभ्यता का क्षेत्र यही स्थान है। पता नहीं किस अभाग्य के कारण वह सभ्यता नष्ट हो गई, परंतु विशेष आतंक तो सिन्धु की बाढ़े थीं। यहॉ महानदी सिन्धु में इतना जल है, परंतु धरती रेत से भरी वीरान एवं उजाड़ है, जैसे बिन मीन (मछली) प्यासी।

क्योंकी सिन्धु का वेग अति प्रबल है इस कारण इसके जल को बॉधने के जितने प्रयत्न हुए, वे असफल हुए। अंत में 'सक्खर' नामक स्थान पर आधुनिक भागीरथों में प्रसिद्ध 'श्री एम. विश्वरैय्या' ने सिन्धु मैया के जल को बॉधा। यहां से अनेक नहरें निकाली गई जिसने प्राचीन सिन्धु सभ्यता की प्यासी धरती को तृप्त किया गया और यह प्रदेश पुनः हरा–भरा हुआ। निरंतर ऊॅचाई से नीचे बहने के कारण सिन्धु अपने वेग को लिए बढ़ती रही इस कारण अपने किनारे महत्वपूर्ण शहरों को बसा नहीं पाई। केवल मिठनकोट से अरब सागर संगम तक प्रमुख नगर बसे है। भारत के इतिहास में इस नदी का बहुत महत्प है। प्राचीन समय से ही देश की भौगोलिक सीमा में जल ग्रहण क्षेत्रों से आंकी जाती थी। यही कारण था कि प्राचीन भारत की भौगोलिक सीमा में इस नदी का बहुत महत्प है। प्राचीन समय से ही भौगोलिक सीमा जल ग्रहण क्षेत्रों से आंकी जाती थी। यही कारण था की प्राचीन भारत की भौगोलिक सीमा मे कैलाश–मानसरोवर भी गिना जाता गया था। इस प्रकार सिन्धु पश्चिमोत्तर में भारत की भौगोलिक सीमा बनाती थी। इसी कारण देश की पूज्य नदियों में इसका नाम भी आया है। अब सिन्धु नहीं का कुछ भाग ही आधुनिक भारत में है। इसी तरह इसकी बड़ी सखियों पंजाब की पांचों नदियों के उद्गम भारत में होते हैं, परंतु इन नदियों का प्रवाह भारत में कम; परंतु भारत के बटवारे के पश्चात बने पाकिस्तान में अधिक है। सिन्धु नदी देश की सभ्यता का केन्द्र बनी थी। इसी प्रकार इस नदी ने इतिहास के पृष्ठ–भूमि के पन्नों के बहुत उलट–फेर भी देखे हैं। जब भी सिन्धु नदी भारतीयों के अधिकारों में रही, निगरानी में रही कोई विदेश बाहर से इस देश में नहीं घुस सका। जब से हमने सिन्धु नदी का साथ छोड़ा तभी से भारत का इतिहास बदला है। जैसे हमने सरस्वती नदी को नहीं भुलाया वैसे परायी हुई सिन्धु को भी नहीं भुलायेंगे। क्योंकि विद्या माता सरस्वती के समान सिन्धु हमारी नदी माता हैं। सिन्धु के रमणी कूल–किनारों को भूलना अपने आप को भूलना है। सिन्धुनही का पानी 1819 के भूकंप के पहले कच्छ प्रदेश को सींचता था, किंतु अब नहीं हं अब नहीं हैं अब यह नदी पाकिस्तान में चली गयी है।

मोक्षदायनी गंगा

हमारे देश की धरती को जितना अमृत गंगा ने दिया उसका हिसाब नहीं। इसी कारण गंगा के बारे में बहुत–सी प्राचीन कथाएं हैं। कपिल ऋषि के शाप से भस्म सागर पुत्रों की कथा को बहुत लोकप्रिय है जिन्हे गंगा जल के स्पर्श से मुक्ति मिली। इसके अतिरिक्त वामन भगवान और भीष्म पितामह के व्रत का भी गंगा से गुथी कथाओं में वर्णन है। गंगा देवलोक की नदी है। हिमालय के ऊॅचे शिखरों में इसका उद्गम है। हिमालय की विस्तृत श्रृंखलाओं का फैलाव भगवान शिव की जटाएं हैं। हिमालय को भगवान शिव का निवास भी कहा जाता है। परमात्मा के कल्याणकारी रूप को भी शिवा कहा गया है। इसलिए यह देवनदी जब स्वर्गलोक से पृथ्वी पर उतरी तो इसके वेग को संभालने के लिए भगवान शिव ने अपनी जटाओं को फैला लिया। यह फैली जटाऍ देवात्मा हिमालय की फैली श्रृंखलाएं ही हैं।

सुर्य के ताप से सागर का जल अंतरिक्ष में चला जाता है। अंतरिक्ष को स्वर्गलोक भी कहा गया है। इधर पृथ्वी जल के बिना भस्म हो रही है। अंतरिक्ष के जल को संभालने के लिए वर्षा के काले–काले बादल चाहिए। ताकि पृथ्वी का

कल्याण हो। यह वर्षा के काले–काले बादल ही भगवान की फैली जटाएं है जिनके द्वारा अमृत रूपी गंगा पृथ्वी पर उतरती है। यह सब हमारी पौराणिक कथाएं गंगा को पृथ्वी पर उतरती है। यह सब हमारी पौराणिक कथाएं गंगा को पृथ्वी पर उतरती है। यह सब हमारी पौराणिक कथाएं गंगा को महत्व प्रदान करती है क्योंकि यह पुण्यसलिला भारत को इतना वरदान देती है जिसको शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। गंगा हमारी सबसे पवित्र नदी है। इसके स्मरण और दर्शन का बहुत फल माना गया है। गंगा के जल को हाथ में लेकर भीष्म ने प्रतिज्ञा की थी, व्रत लिया था। इसी प्रतिक्षा का पालन करने के कारण भीष्म 'पितामह' बने और 'गंगापुत्र' कहलाये । हम सब जो भी गंगा घाट पर बसे है गंगा पुत्र के समान हैं, परंतु भीष्म पितामह की प्रतिज्ञा का तत्व बहुत विशाल और उन्नत था, जा धर्म को नई मर्यादा दे गया। इसी कारण मानवों मानवों में केवल भीष्म हीं गंगापुत्र कहलाये। आज भी अपनी बात को सच्चा प्रमाणित करने के लिए गंगाजल को पात्र में केवल भीष्म ही गंगापुत्र कहलाये। आज भी अपनी बात को सच्चा प्रमाणित करने के लिए गंगाजल को पात्र में रख शपथ खाते हैं। गंगा मोक्षदायनी नदी है। मानवीय विश्वासों में जीवन मृत्यु के चक्कर से छूटना मोफ प्राप्त करना है। गंगा की धारा को हमने सबसे पवित्र इसी कारण कहा है। क्योंकि जहॉ गंगा है वहॉ जल है, वहॉ अन्न और धन भी है। इस कारण संसार के दुःख–चक्र से गंगा मोक्ष दिलाती है। इस नदी पर जितने संगम हैं सब पवित्र तीर्थ हैं और उन्हें 'प्रयाग' कहा जाता है। उत्तराखंड में पॉच मुख्य संगम हैं। हिमालय में 'भागीरथी' और 'अकलनन्दा गंगा' की मुख्य धाराएं हैं, जिस पर यह संगम–तीर्थ है। 1 सबसे प्रथम विष्णु प्रयाग, अलकनन्दा और विष्णु गंगा नदियों के संगम पर है। 2 दूसरा नन्दप्रयाग–अलकनन्द और नन्दा नदियों के संगम पर 3 तीसरा कर्णप्रयाग पिण्डर गंगा और अलकनन्दा नदियों के संगम पर, 4 चौथ रूद्रप्रयाग अलकनन्दा और मन्दाकिनी के संगम पर। इसी प्रकार (5) पॉचवॉ संगम अलकनन्दा और भागीरथी का 'देवप्रयाग' पर होत है। इसके पश्चात् इस सम्मिलित धारा को गंगा नाम मिलता है। गंगोत्री ग्लेशियर से भागीरथी नदी का निकास होता है। जहॉ से भागरिथी निकलती है उसे 'गोमुख कहते हैं। यह गंगोत्री नामक तीर्थ ये 9 कि.मी. ऊपर है। भगीरथी अलकनन्दा संगम से पहले भागरथी में अनेक छोटी–छोटी धाराएं गिरती है। अलकनन्दा हिमालय में गंगोत्री से भी ऊपर की श्रृखलाओं की जल–धाराऍ ग्रहन कर भागीरथी से मिलती है। यह सब जल–धाराऍ बर्फ के पिघलने से इकट्ठी होती हैं। इस कारण इनका जल बरसों रखने पर खराब नहीं होता। उत्तराखण्ड की जितनी भी छोटी–मोटी नदियां हैं सब गंगा की धाराएं कही जाती हैं। जहॉ तक कि 'शारदा' में गिरने वाली धाराएं भी गंगा नाम से प्रसिद्ध हैं।

हरिद्वार, जो कि हमारी सप्तपुरियों में से एक है, में पहाड़ी क्षेत्र से मैदानी क्षेत्र पर उतरती है। अपनी अथाह वेग से पहाड़ों को चूर्ण करने वाली यह नदी अब सहज वेग से धारा मुक्ति के लिए बढ़ती है। यहॉ पर गंगा नदी पर बॉध बॉधकर नहरों द्वारा खेतों में गंगाजल पहुॅचाया जा रहा है। उत्तर प्रदेश के सैकड़ों छोटे–बड़े नगर उस नदी बसे हैं जिनमें 'कानपुर का औद्योगिक नगर', गढ़ गंगा का तीर्थ और विद्या केन्द्र 'वाराणसी' बहुत प्रसिद्ध है। 'इलाहाबाद' पर यमुना नदी अपनी सखियों का जल सहेज गंगा जी से संगम करती है। इस संगम को 'प्रयागराज' भी कहते हैं, क्योंकि यह संगम सबसे पवित्र है। यहॉ यमुना, गंगा और ब्रह्मरूपा सरस्वती का त्रिवेणी संगम है। सरस्वती नदी सूख गई है, क्योंकि इसके स्त्रोतों का जल अब यमुना नदी में जाने लगा हैं। इस कारण वैदिक संस्कृति की जननी सरस्वती का मानस संगम प्रयागराज में माना जाने लगा है। यह तथ्य हमारी संस्कृति का अंतःसाक्षी है। हमारी संस्कृति में नदी संगम विशेष प्रेरणा देते हैं। एक नदी दूसरी नदी में मिलती है और अपना नाम मिटानी है, अपना आप लुटाती है। नाम, रूप खोकर मुक्त होना इन संगमों की विशेष प्रेरणा है। इसी कारण नदी संगम हमारे तीर्थ हैं। आज से नहीं प्राचीन समय से जहॉ नदियों या भागों का मेल होता था उन स्थानों पर व्यापार केन्द्र बन जाते थे। यही कारण है कि नदी संगमों का व्यापारिक, सामाजिक और सैनिक महत्व है। परंतु इनका सांस्कृतिक महत्व भी है। प्रयाग में यमुना नदी अपना नाम रूप गंगा का अर्पण कर देती है। यह नाम मिटाना एक बार होता है। 'ब्रह्मपुत्र नदी' जब अपनी अथाह जलराशि को लेकर मोआलपाड़ा से दक्षिण पूर्व की ओर मुड़ती है तो उसका नाम 'यमुना' हो जाता है। फराका के पश्चात गंगा भागरीरथी–हुगली और गंगापद्मा नाम से पृथक दिशाओं में सागर अभिमुख बहती है। पद्मा जब बंगला देश में यमुना से मिलती है तो दोबार यमुना अपना नाम रूप खोकर पद्मा हो जाता है। गंगा हिमालय के उच्च–शिक्षरों से चलकर 'प्रयाग','वाराणसी', 'पटना' आदि स्थानों को पारकर 'गंगासागर' में बंगाल की खाड़ी से स्वछन्द होकर संगम करती है। यह सारा 2600 किलोमीटर का मार्ग गंगा के कल–कल निनाद करते जल से पवित्र है। सैकड़ों पर गंगा से संबंधित पर्व और त्योहार इस मार्ग गंगा के कल–कल निनाद करते जल से पवित्र है। सैकड़ों स्थानों पर गंगा से संबंधित पर्व और त्योहार इस मार्ग पर मनाये जाते हैं। इस सारे मार्ग की धरती गंगा के वरदान के कारण धन–धान्य से भरपूर है। आर्यावर्त्त और मध्यप्रदेश में गंगा यमुना का विश्व का सबसे उपजाऊ मैदान गंगा और यमुना के जल से पूरी तरह सिंचित है। भारत के सबसे प्राचीन नगर गंगा के इसी प्रवाह के कारण शोभायमान हैं। भारत के स्वर्ण युग का इतिहास इन्हीं नगरों और इसी धरती की सत्ता पर लिखा गया। गंगा द्वारा सारे उत्तर भारत का व्यापार चलता था। भारत के प्राचीन विदेशी व्यापार का ताम्र–लिपि नामक केन्द्र गंगा के किनारे ही बसा हुआ था। नदी के समानान्तर प्राचीन सार्थवाहों का मार्ग भी था। इसी कारण प्राचीन समय से लेकर आज तक भारत की घनी आबादी वाला यही प्रदेश है। भारत के बड़े–बड़े साम्राज्य इसी नदी के तट पर बने, सॅवरे और बिगड़े। चन्द्रगुप्त, अशोक, समुद्रगुप्त, हर्षवर्धन आदि सम्राट वाल्मीकि, बुद्ध, महावीर जैसे मनीषी, कबीर, सूर, तुलसी जैसे सन्त और भक्त तथा वाराणसी जैसे विद्या केन्द्र सब गंगा की महिमा बढ़ाने वाले बने। गंगा के उत्तर की ओर से 'रामगंगा', 'गोमती', 'घाघरा', 'गंडक' और 'कोसी' प्रमुख सहायक नदियॉ हैं। 'सरयू', 'शारदा', 'राप्ती' आदि इन्हीं सहायक नदियों की उप–नदियॉ हैं। समानान्तर बहती यमुना अपनी प्रमुख सहेलियों के साथ प्रयाग में गंगा से संगम करती है। दक्षिण की ओर 'सोन' और 'फल्गू' प्रसिद्ध नदियां हैं। 'सोन नदी का पाट भारत की नदियों में सबसे चौड़ा है।' वर्षा ऋतु में यह अपने अथाह जल भारत को गंगा जी से अर्पण करती हैं। बिहार में इस सारी जलराशि को समेट गंगा समुद्र सा विशाल रूप ले बंगाल में प्रवेश करती है तो अपने जल भण्डारों को बॉटना आरंभ कर देती है।

गंगा का जल अमृत है, इस कारण जितने गीत गंगा की महिमा के हमारे होंठों पर हैं उतने ही गंगा के प्यारे रूप हैं। गंगाजल हम भारतीयों की एकता का सूत्र हैं। इसे सभी धर्मों, जातियों और संप्रदायों के लोग मानते हैं। उससे फायदा उठाते है। कहीं कोई भेदभाव नहीं होता। यह जल चहुॅओर देश में फैले देवमन्दिरों मे विशेष पूजन के समय चढ़ाया जाता है। हिमालय के दर्शनों के लिए आया यात्री, हरिद्वार, ऋषिकेश से गंगाजल लेकर पुरी, रामेश्वरम और द्वारिका ले जाकर

भेंट करता है। यदि इन स्थानों का तीर्थ न कर सके तो अपने स्थानीय देवमन्दिर में तो अवश्य चढ़ाता है।हर हिन्दू भारतीय अपने घर में गंगाजल अवश्य रखने का यत्न करता है। हमारे प्राचीन साहित्य में गंगा जी के विष्णुपदी, जाहन्वी, मन्दाकिनी आदि नाम भी है। यह सब पवित्र ज्ञान परक नाम हैं। हमारी भारतीय संस्कृति तीन नदियों के कारण फूल–फली–ये नदियां हैं सरस्वती, गंगा और नर्मदा। नर्मदा हमारी तीसरी नदी है, जिस पर प्राचीन समय से ही सांस्कृतिक केन्द्र मिलते हैं। जो महत्त्व सरस्वती और गंगाका है वही नर्मदा मैया का भी है। इस नदी को 'भारत मेखला' भी कहते हैं। स्त्रियों द्वारा कमर में बॉधने वाली मेखला के समान यह नदी भारत के ठीक मध्य में बहती है और उत्तर भारत की सबसे पवित्र नदी है। जितने तीर्थ, घाट और प्राचीन धार्मिक स्थल नर्मदा की धारा पर बसे हैं उतने भारत की किसी अन्य नदी पर नहीं हैं। नदी के दोनों ओर हर तीन–चार किलोमीटर पर घाट और मंदिर मिलेंगे। एक प्रकार से हजारों मंदिर और घाट इस नदी पर बनें है। विन्ध्य और सतपुड़ी के बीच बनी घाटी में बनने के कारण नर्मदा नदी के तटों पर प्राकृतिक दृश्योंकी भरमार है। यही कारण है कि प्राचीन समय से ही ऋषि–मुनि, साधु–सन्यासी अपने आरम नर्मदा के प्रवाह के साथ बनाते रहे थे और यज्ञ–याज्ञ किया करते थे। अब भी कई प्राचीन स्थानों पर सुगन्धित राख के ढेर मिलते हैं जो इस बात के साक्षी हैं।

नर्मदा नदी की कुछ अपनी विशेषताऍ भी हैं। नर्मदा का अर्थ है, सुख देने चाली। यह नदी न बहुत गहरी है और न छिछली, इस कारण छोटे–बड़े इस नदी के तटों पर निशंक अपने खेल हैं और नदी कानाम सार्थक करते हैं। दूसरे नर्मदा नदी अपने उद्‌गम अमरकंटक से लेकर भड़ौच तक 1500 किलोमीटर लंबे मार्ग पर निरंतर ऊॅचाई से नीचे की ओर बहती है। अमरकंटक समुद्र तल से 1000 मीटर ऊॅचा रमणीक और ठंडा स्थान है। इस कारण यह नदी उछलती–कूदती और फॉदती बहती है। जिस कारण इसका नाम 'रेवा' भी है। भारत में केवल इसी पवित्र नदी की भक्त लोग पैदल परिक्रमा करते है। इसी कारण दोनों तटो पर 400 के आस–पास छोटे–बड़े गॉव–कस्बे और शहर बसे है। हर दूसरे–तीसरे कोस की दूरी पर मंदिर घाट आदि विश्राम के लिए बने है। इस प्रकार अमरकंटक से लेकर सागर तक, 'मण्डला', 'जबलपुर', 'होशंगाबाद', 'नेमावर', 'ओम्कोटेश्वर', 'मंधाता', 'कपिलतीर्थ', 'बड़वानी', 'बावन गजाजी', 'हापेश्वर', 'सीनोर', 'भड़ौच' तथा 'विमश्वर' आदि प्राचीन शहर और तीर्थ स्थान इस नदी के तट मौजूद हैं। 'बावन गजा जी' में 84 ऊॅची विशाल जैन मूर्ति एक ही चट्टान में खुदी है। इस नदी पर प्रमुख मंदिर शिव के हैं तथा अन्य देवी–देवताओं के भी विशाल मंदिर हैं।

''नर्मदा पर कपिलधारा पर सबसे बड़ा प्रपात है। जबलपुर के पास धुऑधार तथा ऑकरेश्वर के पास घायडी कुण्ड पर अन्य बड़े प्रपात हैं। इसी कुण्ड में घुट–घुटकर चिकने चमकीले शिवलिंग जैसे पत्थर मिलते हैं। नर्मदा की धारा में ऊपर से बहते पत्थर इस स्थान पर इकट्ठ होते हैं और यहीं से भारतभर के देव मंदिरों में प्रतिष्ठा के लिए भेजे जाते हैं। मण्डला तथा महेश्वर के पास नर्मदा चट्टानों के आने के कारण सैकड़ो धाराओं में बंट जाती है और इन स्थानों को सहस्त्रधारा तीर्थ कहते हैं। घने जंगलों, ऊॅची–नीची पहाड़िया तथा अन्य प्राकृ तिक वरदानों के कारण नर्मदा का तट बहुत सुहावना और सफेद संगमरमर की चट्टानों को काटकर बहता है। चांदनी रातों में ऊची चट्टानों के बीच नर्मदा में नौका बिहार विश्च प्रसिद्ध आकर्षण लिए है।'' ओंकारेश्वर मंदिर नर्मदा के बीच पहाड़ी द्वीप पर है। यह बहुत प्राचीन स्थान है। यहॉ पर ऐतिहासिक अभिलेख और अवशेष मिले हैं। ऊॅ जैसे आकार वाली पहाड़ी पर बना शिव मंदिर भारत के 12 ज्योतिलिंगों में से एक है। यहॉ पर प्राचीन मंदिरों के अवशेष मिले हैं, जिसमें मनोरम और उत्कृष्ट मूर्तिकला के दर्शन होते हैं। नर्मदा प्रवाह में ओंकारेश्वर मान्धात सबसे रमणीक और पवित्र स्थान है। शुक्र तीर्थ नामक स्थान पर नर्मदा में एक अन्य टापू है जिसमें विश्व का सबसे बड़ा वट वृक्ष है। इसको कबीर वट कहते हैं। इस वृक्ष के नीचे हजारों व्यक्ति विश्राम कर सकते है। हमारे पौराणिक साहित्या में नर्मदा की सैकड़ो कथाऍ हैं। नर्मदा नदी भगवान शंकर की जटाओं में थमी गंगा जी का भाग है। इस कारण यह परम पवित्र नदी है। इस नदी का भी हमारे इतिहास के निर्माण में बहुत बड़ा भाग है। दक्षिण भारत को अपने साम्राज्य में रखने के लिए कई युद्ध इस नदी के तट पर भी लड़े गये सतपुड़ा और विन्ध्य को बस में रखने वाले कई साम्राज्य इसके ऑचल में खो गये, परंतु यह मनमौजी नदी अपने मे मस्त रही। समुद्र संगम के पास इसका पाट मीलों चौड़ा हो जाता हैं। भड़ौच से विमलेश्वर जो नर्मदा के दूसरे किनारे पर बसा है 18 किलोमीटर की दूरी पर है। सिन्धु, सरस्वती, गंगा और यमुना जो हिमालय से निकलती हैं। नर्मदा, गोदावरी और कावेरी हमारे पर्वतों से निकलती हैं। हिमालय से निकलने वाली नदियों में गर्मियों में जल की मात्रा बहुत कम हो जाती है। नदी घाटी योजनाओं के बनने से नदियों में पूरे वर्ष पर्याप्त मात्रा में जल प्रवाह होने की संभावनाएं बढ़ गई हैं।

यमुना नाम की दो प्रमुख भारतीय नदियॉ हैं एक तो 'कालिन्दी यमुना' जो प्रयाग में गंगा से संगम करती है और दूसरी 'ब्रह्मपुत्र'। मंत्र में नदियों संबंधी संकेत नदी प्रवाहों के लिए है। इस कारण ब्रह्मपुत्र जो कि एक स्वतंत्र नदी प्रवाह है, को यमुना मानने में कोई शंका नहीं होनी चाहिए। अग्नि पुराण के मूर्ति लक्षणों में यमुना के दोनों हाथों में कलश दिखाए हैं। जल से भरपूर ऐसी नदी केवल ब्रह्मपुत्र ही है।उदयगिरि के गुफा मंदिरों में संगम दृश्यों में भी यमुना बाऍ से प्रवाहित हो रहीं है। इस कारण ब्रह्मपुत्र ही वास्तविक यमुना है। कुछ ऐतिहासिक कारणों से बाद में कालिन्दी यमुना को प्रमुखता दी गई होगी? हमारे ऐतिहासिक विवरणों की अंतः साक्षी भी हमारे महापुरूष इसी ढंग पर करते हैं–जैसे–प्रयाग का त्रिवेणी संगम। सरस्वती नदी प्रवाह को सूखें हजारों वर्ष बीत गए परंतु हम सरस्वती नदी को नहीं भूले; क्योंकि प्रयाग के संगम में सरस्वती नदी भी आती हैं। सरस्वत नदी का प्रवाह प्राकृतिक कारणों से रूक गया होगा। हिमालय की ऊपरी श्रृंखलाओं से निकलने वाली सरस्वती का जल आखिर किसी तरफ मुड़ा तो होगा जरूर? इस जल के दो मार्ग हैं– 'सतलज' और 'यमुना'। जिस प्राकृतिक प्रकोप ने सरस्वती के जल को रोका, उसी ने सतुलुज के जल को भी मोड़ा है; क्योंकि सतलुज सरस्वती की सहायक नदी थी ऐसे प्रमाण मिले हैं। अब केवल यमुना ही सरस्वती के ऊपर वाले जल को ग्रहण करने वाली नदी है– इस अंतः साक्षी को जीवित रखा प्रयागराज के त्रिवेणी संगम ने।

स्संार में सबसे प्राचीन देश भारत वर्ष (हिन्दुस्तान) है। हमारे देश की संस्कृति, सभ्यता और इतिहास सबसे प्राचीन से प्राचीन है। संसार में सबसे प्राचीन पुस्तक वेद है जिसमें धर्म के वह तत्व हैं जो हमारी भारतीय संस्कृति की उच्चतम अवस्था का बोध कराते हैं जिस प्रकार युग बदलते गए, उसी प्रकार इतिहास की धाराऍ भी बदलती रहीं।

''युग बदल गया, हम बदल गये।
युग नया हुआ, हम नये हुये।।''

हमारे देश का सबसे प्राचीन नाम भारत ही है। प्राचीन भूगोल में एशिया के भू–खण्ड को जम्बू द्वीप कहते थे। उसमें सात वर्ष या महाखंड थे। वर्ष के विभाग में भारतवर्ष तथा खंड के विभाग में हमारे देश का नाम 'कुमारी खण्ड' था। पुराणों में देश का नाम 'कुमारी द्वीप' भी के नाम पर जाना जाता था। भरत संतानों द्वारा सुरक्षित रहने से हमारे देश का नाम भारत हुआ था।महाराजा भरत हमारे देश के पहले चक्रवर्ती सम्राट थे। देश के नाम के बारे में इतिहास में अन्य धारणाएं भी हैं। विदेशी लोगों ने हमारे भारत को भगवान की दि प्राकृतिक संपदाओं के कारण विशेष गुणवाचक नाम दिये। एन नामों में से एक प्यारा–सा नाम है–'सप्त सिन्ध देश।' दूर–दूर से लोग हमारी इस धरती पर व्यापर, विद्या, शिक्षा और सभ्यता सीखने आते थे। तब से इस देश में कल–कल निनाद करती, उछलती–कूदती नदियों को चहुँ ओर पाते थे। इस कारण इस देश को सिन्धुओं का विशेषकर सप्त या सात सिंधुओं का देश कहते थे। सिंधु समुद्र को भी कहते हैं। हमारे देश की यह बड़ी–बड़ी नदियॉ जब इठलाती–इतरीती अपनी सहेलियों के जल को सहेज कर सागर के पास पहुँचती थीं, तो बड़े–बड़े नद का रूप ले लेती थीं। इन महान नदों का फैलाव समुद्र जैसा लगता था। इधर के किनारे से दूसरी ओर का कूल–किनारा नहीं दिखता था। इस कारण इन विशाल नदियों को सिन्धु कहा जाता था। इनके द्वारा लोग व्यापार के लिए, यात्रा के लिए आया–जाया करते थे। साधारण नदियों पर बॉध बॉधकर नहरें भी निकली जाती थीं। जिनका प्रयोग खेती और शहरों में जलपूर्ति के लिए भी होता था। हमारे देश की उत्तरी सीमा की विशाल नदी का नाम सिन्धु है। इसी सिन्धु नाम के कारण हमारे देश और लोगों के लिए हिन्दु, इण्डोस, शिनतु आदि नाम मिले, जो अन्य देशों के लोग भारत के लिए प्रयोग करते थे। समय पाकर उस प्रदेश का नाम भी सिन्ध कहलाने लगा जहॉ यह नदी महानद के रूप में सागर संगम करती है। प्राचीन यूनान और नाम का प्रयोग करते हैं। हमारी संस्कृति में सात का बहुत महत्व है। हमारे प्रमुख सात धान्य हैं ('जौ', 'गेहूं', 'धान', 'तिल', 'कंगु', 'श्यामक', तथा 'चीनक' अथवा 'देवधान्य') जिनको धार्मिक कार्यो में पवित्र माना है। सात पुण्य पर्वत हैं ('महेन्द्र', 'मल्य', 'सहयाद्री', 'शुक्तिमान', 'ऋक्ष', 'विन्ध्य', तथा 'पारियात्र') यह हमारे कुल पर्वत हैं। आज की पूर्वी घाट, नीलगिरी, पश्चिमी घाट, अजन्ता, सतपुड़ा, तथा छोटा नागपुर, विन्ध्य और अरावली पहाड़ियों के यह पुराने नाम हैं। सात प्रमुख नदी समूह, सात पवित्र नगरियॉ, 'काशी', 'कांचीपुरम', 'हरिद्वार', 'अयोध्या', 'द्वारिका', 'मथुरा' और 'उज्जैन'। इसी प्रकार 'सात भुवन', 'सात लोक', 'सप्तक्षेत्र', 'सूर्य के सात घोड़े', 'सात मातृदेवियां' और प्रातः स्मरण के 'सात श्लोक' हैं।

हमारी सात पवित्र नदियौं है–'गंगा','यमुना', 'गोदावरी', 'सरस्वती', 'कावेरी', 'नर्मदा', तथा 'सिन्धु'। वास्तव में यह नदी समूहों के नाम हैं जो भारत की धरती में नसों की तरह फैले हैं। गंगा तथा यमुना–आज के गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र नदी समूहों के लिए तथा गोदावरी, कृष्णा के लिए गोदावरी नाम का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार सिंधु को सिन्धु तथा पंजाब की पॉचों नदियों के लिए प्रयुक्त हुआ है। सरस्वती नदी अब सूख गई है। अब इस नदी की सहायक नदियां बची हैं। परंतु यह हमारी सबसे महत्वपूर्ण नदी थी।

संसार के किसी भी देश में इतने बड़े और बाराह महीने जल से भरपूर नदी समूह नहीं है जैसे भारत में हैं। इनके अतिरिक्त छोटी–बड़ी सैकड़ो नदियॉ हैं जो विशाल जलराशि को अपने उद्‌गम से लेकर समुद्र को अर्पण करती हैं। जल जीवन का पहला स्त्रोत है। जहॉ जल है वहीं जीवन के तत्व मिलते हैं। मनुष्य, पशु, पक्षी सब जल द्वारा पोषित और पल्लवित–अन्न, फल–फूल आदि का निर्वाह करते हैं। संसार की सब प्राचीन सभ्यताएँ और प्राचीन नगर उन्हीं स्थापित हुए जहॉ जल की प्रचुरता थी। मिश्र में 'नील नदी', आज के ईराक में 'दजला' और 'फरात' नदी, भारत में 'सिंधु' और 'सरस्वती', चीन में 'ह्वांगाहों नदी' द्वारा सींची भूमि पर प्राचीन सभ्यताओं के केन्द्रों के अवशेष मिले हैं।

महाभारत में पांडवों का स्वर्ग आरोहण का मार्ग हिमालय में से हीं है। उस युग से लेकर आज तक हमारे ऋषियों, मुनियों, योगियों की साधना–स्थली हिमालय ही है। ''हिमालय की पवित्र–पावन गोद हमें बुलाती है, क्योंकि हिमालय का जल, फल और अन्न अमृतमय है। हर प्रकार की कठिनाई में, परेशानी में, संसार के मोह–माया से बिरत होने वालों का शरण–स्थल भी हिमालय है। जितनी श्रद्धा हमारी भगवान में है। उतनी ही हिमालय में भी है। विशेषकर मानव जाति वहीं उन्नति कर सकी है जहॉ जल है। पुराने अवशेषों के उत्खनन ने यह प्रमाणित किया गया है। प्राचीन शहर नदियों के किनारे बसे हैं वैसे ही अति प्राचीन समय में भी होता था। नदियॉ हमें जल प्रदान करती थीं और साथ ही साथ यातायात और व्यापार के लिए मार्ग देती थीं। पृथ्वी के अंदर जो जल के स्त्रोत जो अब कुएँ, नलकूपों के रूप में पाते हैं उनमें भी नदियों का प्रवाह प्रमुख कारण है।''